



निकल कर कशेरुकी जीवों के पूरे जैव-विकास की कहानी इन्हें मालूम है कि एम्फिबियन से रेप्टाइल और एवियन और मैमल कैसे बने और आज इस रूप में हमें आज भी देख रहे हैं, यह कथा है इस चीड़ की अरबों बरस पुरानी, और आज भी हमारे भारत भूमि में यह पहाड़ों में सीना ताने खड़े हैं, प्रकृति की कारीगरी देखिए, उसे पता था कि परागण करने के लिए न तो धरती पर चिड़िया है न मधुमखी, न और जीव तो कोनिफर अर्थात् कोन वाले अविकसित पुष्प बनाए ठोस कठोर जो आधी तूफान में भी न टूटे और सैकड़ों वर्ष तक उनके भीतर अंडाणु व बीजाणु सुरक्षित रह सके, और परागण भी उन तेज हवाओं के द्वारा हो, कालांतर में यही कोन वाले अविकसित पुष्प, एंजिओस्पर्म की वनस्पतियों में सुंदर व सम्पूर्ण रंग बिरंगे पुष्प बने जिनमें दल पुंकेश्वर वर्तिका अंडाशय सब मौजूद थे, और गूदेदार रसदार फल बने क्योंकि धरती पर तब तक चिड़िया तितली मधुमखियाँ आदमी सब मौजूद हो चुके थे जो परागण से लेकर अपने पेट भरने तक कि कवायदों में जुड़ चुके थे, प्रकृति ज़रूरत के हिसाब से खुद को बदलती है उसकी टाइम मशीन निर्धारित है मानों पहले से सब लेखा-जोखा लिखा जा चुका है कि अब होना है, टाइम मशीन की बात चली तो बताऊं की इन चीड़ के बीजों में भी टाइम मशीन फिट है, जंगलों में लगी आग से पेड़ों पर लगे कठोर फल जो जमीन पर गिर जाते हैं वे तब तक पड़े रहते हैं जब तक वह वृक्ष नष्ट नहीं हो जाता और उस वृक्ष के नष्ट होने के साथ ये बीज उगना शुरू कर देते हैं, अल्मोड़ा से जागेश्वर मार्ग पर इन आदि-वृक्षों से जब राब्ला हुआ तो मन किया ये कहानी कहूँ, लेकिन असल बात अभी बाकी है।



कुमायूँ के अल्मोड़ा जागेश्वर मार्ग पर जब कुछ चीड़ के वृक्षों को लहलुहान देखा जैसे उनकी खाल (बार्क) उधेड़ी गई हो, और चीड़ के तनों में पंजो जैसे निशान बनाए गए, और तने में एक टिन का कुप्पी नुमा बर्तन लगाया गया, नजदीक जाकर देखा तो ये ताड़ खजूर आदि से निकाले जाने वाले ताड़ी जैसे पेय पदार्थ वाला मसला लगा, लेकिन चीड़ के थोड़े बहुत टॉक्सिकेंट होने से परिचित था, करोड़ों वर्ष पहले डायनासोर तो इनकी पत्तियों को खा जाते थे, किन्तु किसी अन्य जीव को इन चीड़ के जहरीले अवयवों को पचा लेने की क्षमता न है, फिर इस कुप्पीनुमा यंत्र में क्या इकट्ठा किया जा रहा है, नजदीक जाकर देखा तो उनमें खुशबूदार पानी भरा था जो बारिश के चलते भर गया उनमें, परन्तु वह खुशबू कैसी? नज़र

दौड़ाई तो तने पर बनाए गए घावों से रिसता गोंद था जो इकट्ठा हो रहा था इन कुप्पीनुमा यंत्रों में, आगे बढ़े तो कई जगह ऐसी स्थितियां दिखी, छिले हुए तने वाले चीड़ के वृक्ष, यहां यह कहना जरूरी हो जाता है कि एकबारगी उत्तराखण्ड सरकार ने जंगलों में आग लगने के कारण चीड़ को दोषी पाते हुए इसे यहां के जंगलों से हटाने का निर्णय लिया था, दरअसल दोषी चीड़ नहीं है, बल्कि चीड़ ही है जो बहुत कम पानी में पहाड़ों पर उग आता है और पहाड़ का मृदा अपरदन रोकता है, ये वही चीड़ है जो कार्बोनिफेरस युग में अत्यधिक ऑक्सीजन के समय से जलता बुझता हुआ करोड़ों वर्ष का सफर तय करते हुए आज भी लगी आग में खुद को बचा ले जाता है, इसके मालूम फायदों की बात करू तो हमारे पहाड़ के लोग आज भी निर्भर हैं चीड़ पर जैसे टिम्बर, जलौनी लकड़ी, रोज़िन, तारपीन आदि के लिए।

भवाली में बना टीवी सैनिटोरियम भी इन्ही चीड़ के जंगलों की खासियत के कारण बनाया गया, क्योंकि चीड़ के तेल में ऐसे तत्व मौजूद हैं जो श्वास व फेफड़ों के रोगों को दूर करते हैं, सामान्यतः चीड़ से प्राप्त रेजिन आदि से परफ्यूम, दवाएँ, व खाद्य पदार्थों को खुशबूदार बनाने में इस्तेमाल किया जाता है, अस्थमा व अर्थराइटिस तथा त्वचा रोगों में भी इसका तेल इस्तेमाल होता है, इसके तने से निकलने वाला पदार्थ जिसमें प्राकृतिक तारपीन होता है जिसका इस्तेमाल रासायनिक तारपीन बनाने में किया जाता है जो वार्निश पेंट आदि में इस्तेमाल होता है। और न जाने कितने नामालूम फ़ायदे होंगे इस आदि वृक्ष के, बस इस वृक्ष की यह व्यथा देखी तो इस बहाने यह कहानी कह डाली।

हमारा यह भारतीय चीड़ जिसे पाइनस रॉक्सबोर्घी कहते हैं, पिनिएसी परिवार का यह सदस्य है, इस चीड़ का नाम स्कॉटिश सर्जन एवं वनस्पतिशास्त्री विलियम रॉक्सबर्ग के नाम पर उनके सम्मान में रखा गया, भारत के वनस्पति शास्त्र के संवर्धन में इस स्कॉटिश सर्जन का बेहतरीन योगदान रहा, भारतीय चीड़ नेपाल तिब्बत भूटान आदि देशों में मौजूद हैं, हालांकि हिमालय में चीड़ की कई अन्य प्रजातियां भी मौजूद हैं। दुःखद यह है कि इस चीड़ को जंगल में अन्य प्रजातियों को न उगने देने का दोषी भी करार किया गया, अरबों वर्ष पूर्व जब चीड़ का उद्भव हुआ तब के बर्फ से लदी धरती के माहौल के मुताबिक इस वृक्ष की पत्तियां कठोर व नुकीली हो गई, और इन पत्तियों के जमीन पर गिरने पर वह एक चादर सी बना लेती हैं जहां किसी और वनस्पति का अंकुरण मुश्किल हो जाता है, जहां तक इनकी निडल्स यानी नुकीली पत्तियों के एसिडिक होने की बात कही जाती है तो यह इतनी एसिडिक नहीं की मिट्टी का पीएच इतना बदल दे कि कोई दूसरी वनस्पति न उग सके। चीड़ की विशेषताओं को दोषी न मानकर इनकी अत्यधिक समय तक न सड़ने वाली पत्तियों को ईंधन, व हैंडीक्राफ्ट के तौर पर इस्तेमाल किया जा सकता है, और डिकम्पोजर द्वारा इनकी पत्तियों की खाद भी बनाई जा सकती है, कई देशों में इनकी पत्तियों से बिजली निर्माण भी हो रहा है।

चीड़ की एक और खासियत अपने अस्तित्व को अक्षुण्य रखने की है वह है इनकी जड़ों में माइकोराइजा जो फंजाई और चीड़ की सहजीविता का सुंदर उदाहरण है यह माइकोराइजा चीड़ की जड़ों से संबद्धित हो जाते हैं, चीड़ जो प्रकाश संश्लेषण से शर्करा बनाता है वह इस फंगस को भी मिल जाता है, और यह फंगस चीड़ को धरती से पानी और मिनरल देती रहती है, एक अद्भुत बात और कि यह फंजाई जहरीले स्राव करती रहती है चीड़ के जड़ों के आसपास नतीजतन मिट्टी में कोई अन्य हानिकारक बीमारी फैलने वाले बैक्टीरिया एल्गी व कीट नहीं उत्पन्न हो पाते, और सबसे चौकाने वाली बात की यह फंगस चीड़ को सूचना भी भेजते हैं जब कोई पेस्ट यानी हानिकारक बीमारी या कीटों का हमला इन वृक्षों पर होने वाला होता है, और ये चीड़ के वृक्ष अपने आस-पास के स्वस्थ वृक्षों को भी अपने राडार पर ले लेते हैं और उन्हें खतरे की सूचना देते हैं, यह कार्य आपस में जुड़ी जड़ों के माइकोराइजा फंगस द्वारा सम्भव हो पाता है।

और अंत में फारेस्ट फायर का दोषी चीड़ नहीं बल्कि आदमजात की यह गतिविधियां हैं जिन्हें आप चित्र में देख सकते हैं, चीड़ को चीर कर उससे तारपीन रोजिन निकालते लोग दोषी हैं जंगल की आग के, क्योंकि अमूनन ये लोग जहां यह कुप्पीनुमा यंत्र लगाते हैं वही बीड़ी सिगरेट या भोजन भी आग जलाकर बनाते हैं, या फिर टूरिस्ट्स के लिए मक्के भुनने की अस्थाई दुकान लगा लेते हैं, और शाम में ही बिना बुझी आग छोड़कर चले जाते हैं, नतीजा यह होता है कि यह फटे तनों से निकलता ज्वलनशील पदार्थ आग में घी का काम करता है और जंगल में फैल जाती है आग तेज हवाओं पर सवार होकर, मैं उत्तराखण्ड वन विभाग से अनुरोध करना चाहूंगा कि इस अवैध तरीके से चीड़ से तारपीन-रेजिन निकालने वालों पर नज़र रखे और यदि कानूनी तौर से प्रस्तावित है चीड़ से यह पदार्थ निकालना तो उसका सुरक्षित तरीका अपनाए बजाए इन पारम्परिक तरीकों के, जैसे बोरहोल मेथड।

चीड़ को लम्बी उम्र, सुगुण, व एकांतता का प्रतीक माना जाता है, इसे फ्रेंड ऑफ विंटर भी कहा जाता है विभिन्न मानव सभ्यताओं में।



कृष्ण कुमार मिश्र

संस्थापक सम्पादक- दुधवा लाइव अंतर्राष्ट्रीय जर्नल

[www.dudhwalive.com](http://www.dudhwalive.com)

लखीमपुर-खीरी, उत्तर प्रदेश

भारत वर्ष

Email: [krishna.manhan@gmail.com](mailto:krishna.manhan@gmail.com)